E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2024; 6(1): 201-203
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 12-01-2024
Accepted: 16-02-2024

डॉ. प्रियंका पाण्डे
राजनीति विज्ञान विभाग,
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय,
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रियंका पाण्डे
राजनीति विज्ञान विभाग,
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय,
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

विश्वविद्यालय स्तर पर छात्राओं में लैगिंक चेतना का स्तर

डॉ. प्रियंका पाण्डे

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2024.v6.i1c.325

सारांश
मानव–मानव के बीच विभिन्न प्रकार के भेदभाव ने सदैव मानव विकास और उन्नति की राह में बाधा ही उत्पन्न की है। वह चाहे जातिगत भेद भाव हो अथवा लैंगिक अथवा नस्लीय । लैंगिक भेदभाव मानवीय भेदभावों में एक गूढ़ एवं चरम भेदभाव की श्रेणी में आता है। महिला व पुरूष के बीच जो भी शारीरिक भिन्नता है। वह प्राकृतिक है, यानि जैवकीय है। इस भिन्नता को लैगिंक भिन्नता कहा जाता है। हमारा समाज व संस्कृति और परिवेश लैगिंक चेतना की भूमिका तय करता है। हम बचपन से ही समाज व संस्कृति के जरिए न केवल भूमिकाओं का निर्वाह करते है, बल्कि आत्मसात भी करते है। लैगिंक चेतना का तात्पर्य व्यवहार परिवर्तन स्वंय व विपरीत लिंग के प्रति हमारी परम्परागत सोच में बदलाव स्थापित करना है। इसके माध्यम से व्यक्तियों को स्वंय के विचारों, विश्वासों में मूल्यांकन का अवसर प्राप्त होता है। लैगिंक संवेदनशील व्यक्ति अन्य लिंग के प्रति न केवल व्यवहार के नए तरीके अपनाता है। अपितु यह संवेदनशीलता उसको लैगिंक मुदों पर स्वंय के विचारों, विश्वासों व मूल्यों पर प्रश्नचिह्न लगाने हेतु भी सक्षम बनाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार लैंगिक संवेदनशीलता से तात्पर्य महिला–पुरूषों के बेहतर स्वास्थ्य हेतु शोध नीतियों एंव ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से जागरूकता का निर्माण एंव विकास करना जो उनके मध्य समानता की भावना विकसित कर सके। लैगिंक समानता के सिद्धांत को भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्य तथा नीति निर्देशक सिद्वातों में भी जोड़ा गया है। वैश्विक लैगिंक अंतराल सूचकांक 2022 में भारत 146 देशों मे 135 स्थान पर रहा। इससे साफ तौर पर अदांजा लगाया जा सकता है कि हमारे देश में लैगिंक भेदभाव की जड़े कितनी मजबूत और गहरी है।

कूटशब्दः लैगिंक चेतना, महिला, जागरूकता, विकास

प्रस्तावना
भारतीय संविधान के अंतर्गत धर्म, जाति, वर्ग और लिंग आदि आधारों पर सबको समान अधिकार प्रदान किया गया हैं। बदलते समाज के साथ महिलाओं की स्थिति में भी बदलाव आया हुआ हैं। प्रत्येक कार्यक्षेत्र में उन्होने पुरूषों के साथ कधें से कंधा मिलाकर कार्य किया हैं। किन्तु अभी भी भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में महिला और पुरूष के मध्य लैंगिक असमानता व्याप्त हैं। यह असमानता समाज व समुदाय के द्वारा स्त्री–पुरूष की सामाजिक भूमिकाओं, सांस्कृतिक जिम्मेदारियों व उनके निर्वाहन के विशिष्ट गुणों को दर्शाती हैं। संविधान लागू होने के छ; दशक बाद भी यह विभेद कम अवश्य हुए हैं किन्तु बने हुए हैं। अगर समाज से इस असमानता को खत्म करना हैं। तो हमें स्कूल, कॉलेज स्तर से ही बच्चों में लैंगिक संवेदनशीलता की समझ विकसित करनी होगी। लैगिक मुदे केवल महिलाओं अथवा बालिकाओं के दमन या भेदभाव तक सीमित नही हैं। उन परम्परागत रूढ़िवादी विचारधाराओं से भी संबधित हैं। जिनमें बालिकाओं और बालकों दोनों को अलग दृष्टिकोण से देखा जाता हैं। जैसे भावुकता, सहजता को पुरूषों की कमजोरी तथा उग्रता एवं बहादुरी को पुरूषतत्व का नाम दिया जाता हैं।

लैगिंग संवेदनशीलताः लैंगिक संवेदनशीलता का तात्पर्य हैं। कि एक लिंग द्वारा दूसरे लिंग के प्रति सहानुभूति की भावना रखना। लिंग संबंध सभी संस्थानों में मौजूद हैं और लिंग संवेदनशीलता विशेष रूप से लिंग के विशेषाधिकार और भेदभाव को पहचानने में प्रकट होती हैं। महिलाओं को समाज में एक वंचित वर्ग के रूप में रखा जाता हैं। महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता सुनिश्चित होने से अनेक समस्याओं जैसे कि नागरिकता एवं अधिकार, यौन उत्पीड़न का सामना करने और समानता एवं स्वतंत्रता के मुद्दों तथा कामुकता से जुड़े प्रश्न को सुलझाना और पौरूष एवं स्त्रीत्व से संबधित मानदंड और कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के परिसरों की विविध एवं विषम संरचना में योगदान देने वाले लोंगों के प्रति समुचित तालमेल एवं सम्मान का भाव पैदा करना संभव हो जाता हैं।

अध्ययन क्षेत्रः प्रस्तुत शोध पत्र में छात्राओं सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोंडा में लैगिंग चेतना का स्तर का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का उददेश्य

- अल्मोडा विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा की छात्राओं का अवरोधजन अध्ययन करना।
- छात्राओं का उच्च शिक्षा लेने के उददेश्य का अध्ययन करना।
- विश्वविद्यालयी परिवेश का अध्ययन करना।
- छात्राओं का लैगिंग चेतना के स्तर का अध्ययन करना।

समस्या का सीमांकनः प्रस्तुत अध्ययन में शोध समस्या का सीमाकंन निम्न रूप मे किया गया है।

- प्रस्तुत अध्ययन विश्वविद्यालय में छात्राओं पर किया गया है,जिनकी संख्या 515 है।
- प्रस्तुत अध्ययन केवल अल्मोडा विश्वविद्यालय के छात्राओं में किया गया है।

न्यादर्श एंव न्यादर्श विधिः प्रस्तुत शोधपत्र में अध्ययन के लिए उद्देश्यीय न्यायदर्श विधि का चुनाव छात्राओं के लिए किया गया है। अल्मोडा विश्वविद्यालय से 515 छात्राओं का चुनाव अध्ययनकर्ता ने इसी विधि से किया है।

अध्ययन प्रविधिः प्रस्तुत शोध पत्र सर्वेक्षण विधि, प्रश्नावली साक्षात्कार पर आधारित है।

उपकरण प्रविधियॉः साक्षात्कार, अवलोकन

विश्वविद्यालय स्तर पर छात्राओं में लैंगिक चेतना के स्तर का अध्ययन

लैंगिक मुद्दों में अक्सर महिला और पुरूष की भूमिका को उनकी शारीरिक,मानसिक क्षमताओं में अंतर से जोड़ना और इसे स्वाभविक रूप में ऐसा होना समझा जाता हैं। इससे समाज में महिला और पुरूषों के असमान स्तर को उचित समझा जाता हैं। हमारे आस–पास के माहौल, विद्यालय,परिसर की शिक्षा से तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही अत्यंत सहजता से बच्चों में लैंगिग संवेदनशीलता जाग्रत की जा सकती हैं।

परिसर में छात्राओं में लैंगिक चेतना के स्तर के अध्ययन के लिए सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय,अल्मोड़ा का चुनाव किया गया। जिसमें कला, विज्ञान, वाणिज्य, व शिक्षा वर्ग के स्नातक एवं स्नाकोत्तर की छात्राओं और शोध छात्राओं का अध्ययन किया गया सभी छात्राओं की आयु सीमा 18 से 30 वर्ष के मध्य थी।

तालिका 1: विश्वविद्यालय में छात्राओं के लैंगिक चेतना के स्तर के अध्ययन की संख्यात्मक स्थिति

पृष्ठभूमि	स्नातक			स्नाकोत्तर			विधि संकाय	उच्च शिक्षा		कुल संख्या
	बी.ए	बी.एस. सी	बी. कॉम	एम. ए	एम.एससी	एम.कॉम		बीएड	पीएचडी	
ग्रामीण	50	30	25	30	20	15	20	25	05	220
शहरी	30	45	50	40	30	30	30	20	20	295
कुल संख्या	80	75	75	70	50	45	50	45	25	515

स्रोत्र– शोधार्थी प्रश्नावली सर्वेक्षण– 2023

तालिका 2: परिसर के शैक्षणिक माहौल के बारे में राय

प्रतिक्रिया	छात्राओं की संख्या	प्रतिशत
अच्छा	95	18.44
बहुत अच्छा	89	17.28
सामान्य	182	35.33
खराब	149	28.95
कुल संख्या	515	100

स्रोत्र– शोधार्थी प्रश्नावली सर्वेक्षण– 2023

चयनित उत्तरदाताओं में से 18.44 प्रतिशत छात्राओं का कहना था कि विश्वविद्यालय में शैक्षणिक माहौल अच्छा हैं, तथा 17.28 प्रतिशत छात्राओं का कहना था कि विश्वविद्यालय में शैक्षणिक माहौल बहुत अच्छा हैं अध्यापिक और अध्यापिकाओं द्वारा नियमित तौर से कक्षा ली जाती हैं। 35.33 प्रतिशत छात्राओं का कहना था कि विश्वविद्यालय में शैक्षणिक माहौल सामान्य हैं। तथा 28.95 प्रतिशत छात्राओं का कहना था विश्वविद्यालय में शैक्षणिक माहौल ठीक नहीं हैं। प्रतिदिन राजनैतिक गतिविधियों तथा परिसर में छात्रों द्वारा नारे बाजी आदि के कारण पढ़ाई बाधित होती हैं।

तालिका 3: छात्रा होने के कारण आपके साथ परिसर में भेदभाव होता हैं

प्रतिक्रिया	छात्राओं की संख्या	प्रतिशत
हॉ	323	62.71
नहीं	192	37.28
कुल संख्या	515	100

स्रोत्र– शोधार्थी प्रश्नावली सर्वेक्षण – 2023

चयनित उत्तरदाताओं में से 62.71 प्रतिशत छात्राओं का कहना था, कि उन्हें परिसर में छात्रा होने के कारण कई तरह के भेदभावों का सामना करना पड़ा हैं छात्राओं का कहना था कि उन्हें अकेले परिसर घूमने, आने–जाने में असहजता महसूस होती हैं क्योंकि अकेले होने पर उन्हें छात्रों के द्वारा छींटाकशी व्यंग्य आदि का भय बना रहता हैं। जबकि 37.28 प्रतिशत छात्राओं का कहना था कि उन्हें छात्रा होने के कारण किसी भी प्रकार के भेदभाव का सामना नही करना पड़ता हैं।

तालिका 4: लैंगिक शिकायत प्रकोष्ठ समिति के बारे में जानकारी है

प्रतिक्रिया	छात्राओं की संख्या	प्रतिशत
हॉ	96	18.64
नहीं	419	81.35
पता नहीं	515	100

स्रोत्र–शोधार्थी प्रश्नावली सर्वेक्षण– 2023

चयनित उत्तरदाताओं में से 18.64 प्रतिशत छात्राओं को विश्वविद्यालय में बनी लैंगिक शिकायत प्रकोष्ठ समिति के बारे में जानकारी हैं। उन्हें यह जानकारी समाचार पत्र तथा पत्र–पत्रिकाओं आदि से प्राप्त हुई। तथा किसी भी प्रकार के भेदभाव होने पर रवह यहॉ शिकायत दर्ज करवा सकते हैं। छात्राओं के बड़े समूह जो 81.35 प्रतिशत को यह समिति की जानकारी नही हैं। उनका कहना था कि इस प्रकार की समिति के बारे में उन्हें कोई जानकारी नही हैं

तालिका 5: छात्राओं की उच्च शिक्षा में बाधक तत्व मानती हैं

प्रतिक्रिया	छात्राओं की संख्या	प्रतिशत
परिवार में पुरूष वादी सोच का व्यापक होना	122	23.68
माता पिता का अशिक्षित होना	96	18.64
कम उम्र में विवाह होना	126	24.46
लैंगिक भेदभाव	102	19.80
अत्यधिक कार्यबोझ	69	13.39

स्रोत्र– शोधार्थी प्रश्नावली सर्वेक्षण– 2023

चयनित उत्तरदाताओं में 23.68 प्रतिशत छात्राओं का कहना था लड़कियों की उच्च शिक्षा में बाधक तत्व परिवार में पितृसत्तामक समाज, रूढ़िवादी सोच तथा सामाजिक कुरीतियॉ का होना माना जाता हैं। ऐसे समाज के द्वारा यह माना जाता हैं ,कि लड़कियों को थोड़ा बहुत पढ़ा–लिखा कर उनकी शादी कर देनी चाहिए। 18.64 प्रतिशत छात्राओं का मानना था कि माता–पिता का अशिक्षित होने के कारण को तथा 24.46 छात्राओं का कहना था कि कम उम्र में विवाह होने के कारण उनकी पढ़ाई बाधित होती हैं तथा 19.80 प्रतिशत छात्राओं का कहना था कि लैंगिक भेदभाव और 13.39 प्रतिशत छात्राओं का कहना था कि अत्यधिक कार्यबोझ के कारण लड़कियों की उच्च शिक्षा बाधित होती हैं।
उच्च शिक्षा में कुल नामांकन में महिलाओं की हिस्सेदारी 46.2 प्रतिशत ही हैं, उच्च शिक्षा हेतु भेजने हेतु अधिकाशं अभिभावकों को उनकी सुरक्षा संबधी चिंता होती हैं। भौगौलिक परिस्थितियॉ तथा परिवहन सुविधाओं की कमी तथा उचित समय में ना मिल पाने के कारण वह उच्च शिक्षा से वंचित हो जाती हैं।

तालिका 6: लैंगिक संवेदना को प्रभावित करने वाला मुख्य कारण

प्रतिक्रिया	छात्राओं की संख्या	प्रतिशत
पाश्चात्य संस्कृति	215	41.74
शिक्षा का निम्न स्तर	210	40.77
अन्य	90	17.47

स्रोत्र– शोधार्थी प्रश्नावली सर्वेक्षण– 2023

चयनित उत्तरदाताओं का मानना था कि पाश्चात्य संस्कृति लैगिक संवेदना को प्रभावित करती हैं ऐसे छात्राओं का प्रतिशत 41.74 हैं तथा 40.77 प्रतिशत छात्राओं का मानना था कि शिक्षा का निम्न स्तर लैंगिक संवेदना को प्रभावित करता हैं। तथा 17. 47 प्रतिशत छात्राओं का मानना था कि अन्य कई कारण ऐसे हैं जो लैंगिक संवेदना को प्रभावित करते हैं। जिसमें सामाजिक रूढ़ियॉ भी मुख्य हैं। जिसके कारण उन्हें विकास के कम अवसर मिलते हैं जिससे उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता हैं।

निष्कर्ष

अतत; हम यह कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय में अभी भी पितृसत्तामक व्यवस्था के अनुरूप व्यवस्था देखने को मिलती हैं। परिसर का वातावरण लैगिक संवेदनशीलता के प्रति प्रतिबद्धता का अभाव देखने को मिलता हैं। लिंग संवेदनशीलता पुरूषों तथा महिलाओं को यह देखने की अनुमति देकर समानता को बढ़ावा देता हैं, कि लिंग के लिए क्या रूढ़िवादी और उचित हैं। परिसर में समय समय में ऐसे कार्यक्रमों, सेमिनारों का आयोजन किया जाना चाहिए जो लिंग के प्रति संवेदनशील बनाने में सफल हो। तथा विद्यार्थीयों की विचार प्रक्रियाओं में बदलाव को प्रभावित कर सके और सामाजिक कुरीतियॉ, रूढ़िवादिताओं तथा पूर्वाग्रहों को तोड़ने में सक्षम हो। इसमें समाज में लैंगिक समानता, लैंगिक संवेदनशीला और तीसरे लिंग के विषय में गंभीरता पूर्वक जानकारी का प्रचार, छात्राओं को सशक्त बनाने हेतु उनके लिए विभिन्न प्राथमिक मंचों को स्थापित करना भी प्रमुख हो सकता है। इसके अतिरिक्त छात्र संघ चुनावों, व विभिन्न छात्र प्रतिनिधित्व वाली इकाईयों में छात्राओं के प्रतिनिधित्व में बढ़ोत्तरी करना भी उचित होगा।

संदर्भ सूची

1. कुशवाहा मनु, 2014 जेंडर और शिक्षा, वाराणसी गंगा सरन ऐण्ड ग्रैण्ड सन्स
2. भसीन कमला, 2000 भला यह जेंडर क्या हैं नई दिल्ली, जागोरी
3. जेंडर और शिक्षा रीडर भाग 1 2010,नई दिल्ली
4. दृष्टि पत्रिका मार्च 2023